कैंसर कोशिकाओं की एक चमकती पहचान

शोधकर्ताओं ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है जिसकी मदद से कैंसर कोशिकाओं को आसानी से पहचानकर हटाया जा सकेगा। यह तकनीक सर्जरी के दौरान विशेष रूप से उपयोगी साबित होगी क्योंकि जितनी अधिक कैंसर कोशिकाओं को हटा दिया जाए, बाद में कीमोथेरपी उतनी ही आसान होती है।

यह तकनीक फिलहाल अंडाशय के ट्यूमर के संदर्भ में कारगर पाई गई है। ऐसा देखा गया है कि अंडाशय कैंसर की अधिकांश कोशिकाओं पर फोलेट नाम अणु (विटामिन बी-9) के लिए ग्राही काफी अधिक संख्या में होते हैं। शोधकर्ताओं ने इसी तथ्य का फायदा उठाया। उन्होंने फोलेट के साथ एक ऐसा पदार्थ जोड़ दिया जो दीप्ति (प्रकाश) पैदा करता है। जब फोलेट और इस प्रदीप्त पदार्थ से मिले-जुले अणु को शरीर में इंजेक्ट किया गया तो यह अंडाशय में विशेष तौर से कैंसर कोशिकाओं से जुड़ गया और वे चमकने लगीं।

वास्तव में यह तकनीक कैंसर कोशिकाओं और स्वस्थ कोशिकाओं के बीच भेद करने के मामले में एक ज़बर्दस्त प्रगति की द्योतक है। अब तक डॉक्टर अपनी आंखों के भरोसे रहते थे। कुछ हद तक कुछ रंजकों का उपयोग भी होने लगा था जो स्वस्थ कोशिकाओं की अपेक्षा कैंसर कोशिकाओं से ज़्यादा जुड़ते हैं। मगर ये रंजक अन्य ऊतकों से भी जुड़ जाते हैं। इस नई तकनीक की बदौलत कैंसर कोशिकाओं की पहचान ज़्यादा स्पष्ट रूप से हो पाएगी।

वैसे इस तकनीक का विकास करने वाले म्यूनिख टेक्निकल विश्वविद्यालय के वेसिलिस निट्ज़िएक्रिओस्टस का कहना है कि अभी उन्होंने सिर्फ इतना दर्शाया है कि यह सिद्धांत व्यवहार में काम करता है। अभी इस तकनीक में काफी सुधार की ज़रूरत है। जैसे अभी पहचान के लिए जिस पदार्थ का उपयोग किया है, वह सिर्फ अंडाशय के कैंसर के लिए उपयोगी है। इसके अलावा कुछ मरीज़ों में यह काम नहीं करता। प्रयोगों के दौरान देखा गया कि कुछ मरीज़ों में इंजेक्शन देने के बाद भी कैंसर कोशिकाओं में चमक पैदा नहीं हुई। कुल मिलाकर इस तकनीक के अस्पतालों में पहुंचने से पहले काफी और परिष्कार की ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***